



aglasem.com

कक्षा १२ व्यावसायिक अध्ययन नोट्स

वित्तीय प्रबंध

Key Notes and Important Questions with Answers

वित्तीय प्रबन्ध

परिचय:-

व्यावसायिक गतिविधियों को संचालित करने हेतु जिस धन की आवश्यकता होती है, उसे व्यावसायिक वित्त कहते हैं वित्त की आवश्यकता, व्यवसाय के स्थापन, संचालन, आधुनिकीकरण, विस्तार तथा विविधीकरण के लिए होती है।

वित्तीय प्रबंध का अर्थ:-

वित्तीय प्रबंध को व्यवसाय में प्रयोग किये जाने वाले कोषों का नियोजन करने, प्राप्त करने, नियन्त्रण करने एवं प्रशासन करने से सम्बन्धित गतिविधि कहा जा सकता है। इसका उद्देश्य आवश्यकता के समय पर्याप्त कोषों को उपलब्ध कराने का विश्वास दिलाना भी होता है तथा अनावश्यक वित्त से बचाकर रखना होता है। यह धन की लागत का भी काम करता है।

व्यावसायिक वित्त के उद्देश्य:-

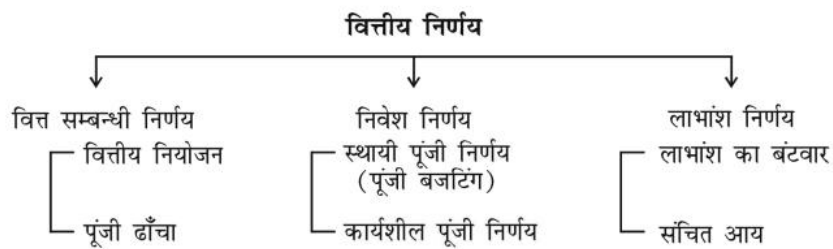
प्राथमिक उद्देश्य:-

धन संपदा को अधिकतम करना:- वित्तीय प्रबंध का मुख्य उद्देश्य अंशधारियों की धन संपदा को अधिकतम करना है जिसके लिए अनुकूलतम पूँजी संरचना तथा कोषों का उचित प्रयोग आवश्यक है।

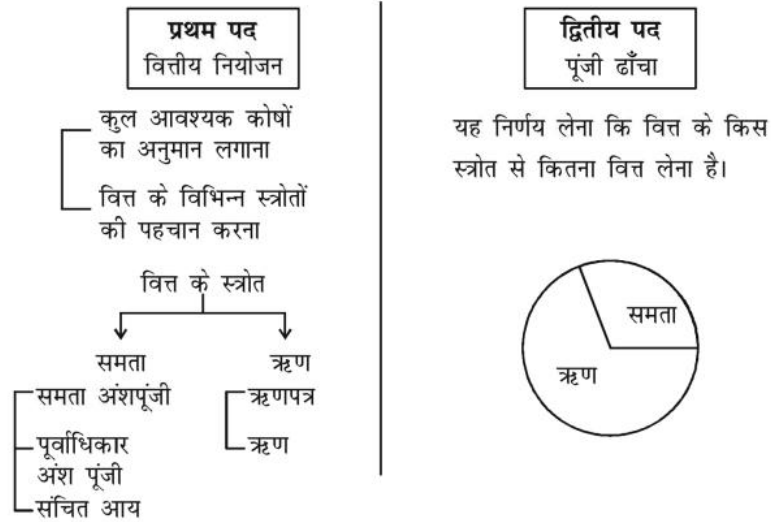
उदाहरण:- यदि श्री X, ए बी सी लि० के 100 अंश प्रति अंश 100 रु० की दर से खरीदते हैं, तो उनकी धन संपदा होगी $(100 \times 100) = 10,000$ रु०। कुछ समय बाद अंशों का बाजार मूल्य बढ़ जाता है और 130 रु० प्रति अंश हो जाती है। अब उनकी धन सम्पदा 13,000 रु० (130×100) हो जाती है। यदि बाजार मूल्य घटकर 90 रु० प्रति अंश हो जाता है तो उन्हें 1000 रु० का नुकसान होता है। अंश का बाजार मूल्य, तीन वित्त निर्णयों पर निर्भर होता है। अंशधारियों की धन-सम्पदा को इस प्रकार अधिकतम किया जा सकता है:-

अन्य उद्देश्य:-

1. **तरलता बनाए रखना:-** कोषों की उचित एवं नियमित आपूर्ति को उचित लागत पर बनाए रखना है।
2. कोषों का उचित उपयोग ताकि उनके उपव्यय से बचा जा सके।
3. **जोखिम को न्यूनतम करना:-** कोषों को व्यवसाय में इस प्रकार लगाया जाना चाहिए जिससे निवेश में जोखिम की संभावना यथासंभव कम से कम होनी चाहिए।



वित्त सम्बन्धी निर्णय:- यह निर्णय दो पदों / भोगों में लिया जाता है।



प्रथम पद वित्तीय नियोजन:-

व्यवसाय के लिए कोषों की आवश्यकता का अनुमान लगाने तथा कोषों के स्रोतों को निर्धारित करने की प्रक्रिया को वित्तीय नियोजन कहते हैं। इसके द्वारा यह सुनिश्चित किया जाता है कि अपने वायदों को पूरा करने तथा योजनाओं के अनुसार कार्य करने के लिए फर्म के पास पर्याप्त कोष उपलब्ध हैं।

वित्तीय नियोजन वित्त के विभिन्न स्रोतों की जानकारी, सही स्रोत का चयन एवं वित्तीय योजनाओं व नीतियों के क्रियान्वयन से सम्बन्धित होता है। वित्तीय नियोजन पहले से ही यह तय करता है कि कितना व्यय किया जाना है व किस पर व्यय किया जाना है।

1. वित्तीय उद्देश्यों का निर्धारण करना,
2. वित्तीय नीतियों व नियमों का निर्माण करना,
3. वित्तीय आवश्यकता का पूर्वानुमान लगाना,
4. वित्त के वैकल्पिक स्रोतों का विकास करना,
5. सर्वोत्तम विकल्प का चयन करना,
6. वित्तीय योजनाओं एवं नीतियों का क्रियान्वयन करना।

वित्तीय नियोजन में अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन दोनों ही योजनाएँ शामिल होती हैं। प्रायः अल्पकालीन वित्तीय नियोजन वार्षिक बजट के रूप में तथा दीर्घकालीन नियोजन पूंजीगत बजट के रूप में होता है।

वित्तीय नियोजन का महत्व:-

- (1) सही समय पर कोषों की आवश्यकता अनुसार उपलब्धता को सुनिश्चित करना।
- (2) यह देखना कि फर्म अनावश्यक रूप से संसाधनों (कोषों) में वृद्धि न करे।
- (3) वित्तीय नियोजन वित्त कार्य को सही तरीके से करने के लिए नीतियाँ एवं कार्यविधियाँ प्रदान करता है।
- (4) वित्त व्यवस्था की लागत न्यूनतम संभव स्तर पर रखी जाती है और दुर्लभ वित्तीय संसाधनों का विवेकसम्मत उपयोग किया जाता है।

- (5) वित्तीय नियोजन नियंत्रण का आधार है। प्रबन्ध यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि कोषों का उपयोग वित्तीय योजनाओं के अनुरूप हो।
- (6) वित्तीय नियोजन कोषों में अतः प्रवाह और बहिर्गमन के बीच एक संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है तथा वर्षभर पर्याप्त नकदी की उपलब्धता सुनिश्चित की जाती है।

द्वितीय पद पूंजी ढाँचा:-

यह निर्णय दीर्घकालीन स्रोतों से धन प्राप्त करने से सम्बन्धित होते हैं। दीर्घकालीन कोषों के मुख्य स्रोत अंशधारी कोष तथा उधारी निधियाँ हैं। उधारी निधियों पर कंपनी को पूर्व निश्चित दर से व्याज निश्चित रूप से देना ही होता है, चाहे कम्पनी को लाभ हुआ हो या न हुआ हो। इनका पुनर्भुगतान भी एक निश्चित समय के उपरांत करना ही पड़ता है। भुगतान न करने की चूक को वित्तीय जोखिम कहा जाता है। जबकि अंशधारियों के प्रति लाभ या पूंजी के पुनर्भुगतान की कोई वचनबद्धता नहीं होती है एक फर्म वित्त के लिए अंशधारी कोष तथा उधारी निधियों दोनों का मिश्रण प्रयोग करती है।

पूँजी संरचना से अभिप्राय स्वामित्व तथा ग्रहीत निधि / उधार कोषों के अनुकूल मिश्रण से है। एक अनुकूल पूँजी संरचना वह होती है जिसमें ऋण एवं समता का अनुपात ऐसा होता है जिससे कि समता अंशों के मूल्य तथा अंश धारकों की धनराशि बढ़ती है।

एक फर्म की सम्मत पूँजी में ऋण के अनुपात को वित्तीय उत्तेलक अथवा पूँजी मिलान कहा जाता है। जब कुल पूँजी में समता अंशपूँजी का भाग कम तथा ऋणों का भाग अधिक होता है तो इसे उच्च मिलान कहा जाता है। जबकि कुल पूँजी में ऋणों का भाग कम होने पर निम्न मिलान कहा जाता है।

$$\text{वित्तीय उत्तेलक} = \frac{\text{ऋण}}{\text{समता}}$$

वित्त सम्बन्धी निर्णय / पूंजी संरचना को प्रभावित करने वाले कारक:-

1. **समता पर व्यापार अवधारणा:-** समता पर व्यापार से आशय समता अंशधारियों द्वारा अर्जित लाभ में वृद्धि का होना है। जिसका कारण स्थाई वित्त व्यय जैसे ब्याज की मात्रा को परिरक्षित रखना है। समता पर व्यापार तब होता है जब आयों की दर उस लागत से अधिक होती है जिस पर कोषों को उधार लिया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप अंशधारियों को प्रतिअंश उच्च दर से लाभांश प्राप्त होता है। समता अंशों के साथ दीर्घकालीन ऋणपत्रों के विवेकसम्मत मिश्रण से समता अंशों पर प्रतिफल अधिकतम किया जा सकता है जो एक उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है :-

	कम्पनी X रु.	कम्पनी Y रु.	कम्पनी Z रु.
समता पूंजी (10 रु. के मूल्य के अंश)	10,00,000	5,00,000	2,00,000
12% पूर्वाधिकार अंश पूंजी (10 रु. के मूल्य के अंश)	—	—	3,00,000
(10% वाले) ऋणपत्र	—	5,00,000	5,00,000
कुल निवेश	10,00,000	10,00,000	10,00,000
ब्याज और करों से पूर्व आय (EBIT)@25%	2,50,000	2,50,000	2,50,000
ऋणों पर ब्याज	—	50,000	50,000
ब्याज के पश्चात् और करों से पूर्व आय	2,50,000	2,00,000	2,00,000
(-) कर @40%	1,00,000	80,000	80,000
समता व पूर्वाधिकार अंशधारियों के लिए उपलब्ध	1,50,000	1,20,000	1,20,000
(-) पूर्वाधिकार अंशों पर लाभांश	—	—	36,000
समता अंशधारियों के लिए उपलब्ध	1,50,000	1,24,000	84,000
समता अंशों की संख्या	1,00,000	50,000	20,000
प्रति अंश आय	रु. 1.50	रु. 2.40	रु. 4.20

समता पर व्यापार करने के कारण कम्पनी Z की प्रति अंश आय अधिक है, जबकि कुल पूंजी और कुल आय दोनों कम्पनियों की एक जैसी है।

2. **रोकड़ प्रवाह स्थिति:-** यदि कम्पनी की रोकड़ प्रवाह स्थिति अच्छी होती है तो वह आसानी से ऋण के माध्यम से कोष प्राप्त कर सकती है। वह ऋणों पर ब्याज का भुगतान एवं मूल वापसी आसानी से कर सकती है,

3. **ब्याज आवरण अनुपात:-** इसके द्वारा यह दर्शाया जाता है कि ब्याज तथा कर काटने से पूर्व लाभ की मात्रा ब्याज से कितने गुना अधिक है। इसके अधिक होने पर कम्पनी ऋणों के माध्यम से वित्त प्राप्त कर सकती है।

$$\text{गणना का तरीका} = \frac{\text{EBIT}}{\text{Interest}} \times \frac{(\text{ब्याज एवं कर से पहले के लाभ})}{(\text{ब्याज})}$$

4. **निवेश पर आय:-** यदि ब्याज की दर से निवेश पर प्राप्त आय की दर अधिक होती है तो ऋणों के माध्यम से कोष प्राप्ति अधिक लाभदायक होगी।
5. **प्रवर्तन लागत:-** यह वे लागतें होती हैं जो अंशों या ऋणों या ऋणपत्रों को निर्गमित किये जाने पर आती हैं जैसे विज्ञापन व्यय, प्रविवरण की छपाई, अभिगोपन आदि। कोषा के लिए प्रयोग की जाने वाली प्रतिभूतियों का चुनाव करते समय प्रवर्तन लागतों का ध्यान रखना चाहिए।
6. **नियंत्रण:-** यदि वर्तमान अंशधारी कम्पनी पर अपना नियंत्रण रखना चाहते हैं तो ऋणों के माध्यम से कोष प्राप्त किये जा सकते हैं। परन्तु समता अंशों के निर्गमन से व्यवसाय पर प्रबंध का नियंत्रण ढीला हो जाता है।
7. **कर दर:-** ऋण पर ब्याज कर को कम करने वाला व्यय है। कर की ऊँची दरए ऋणों को अपेक्षाकृत सस्ता करती है।
8. **लागत:-** विभिन्न स्रोतों से कोष प्राप्त करने की लागत भिन्न होती है। मितव्ययी स्रोत से ही कोष प्राप्त करने चाहिए।
9. **जोखिम:-** विभिन्न स्रोतों में संबंधित जोखिम भिन्न होते हैं। उधार लिए गये कोष में स्वामित्व कोष की अपेक्षा अधिक जोखिम होता है क्योंकि ऋण पर ब्याज देना पड़ता है तथा इसे लौटाना भी पड़ता है।
10. **वित्त व्यवस्था की अवधि:-** स्थायी सम्पत्ति के लिए समता अंशों को जारी करना चाहिए क्योंकि कम्पनी के जीवन काल में इन्हें वापिस नहीं किया जाता तथा दीर्घकालीन व मध्यकालिक आवश्यकताओं के लिए ऋणपत्रों तथा पूर्वाधिकार अंशों को जाना चाहिए।

प्र०1. वित्तीय उत्तोलक का फार्मूला लिखिए।	
(संकेत:- ऋण/समता)	(1)
प्र०2. पूंजी ढांचे पर व्यावसायिक जोखिम का क्या प्रभाव पड़ता है ?	
(संकेत:- जोखिम बढ़ने पर ऋण का प्रयोग कम होगा)	(1)
प्र०3. किन परिस्थितियों में EPS, ऋण बढ़ने पर घटता है ?	(1)
(संकेत:- 1. प्रतिफल दर, ब्याज दर से कम हो 2. आय का कम होना	
प्र०4. “ऋण की लागत समता अंश पूंजी की लागत से कम होती है।” कारण दीजिए कि तब भी एक कम्पनी केवल ऋण की सहायता से कार्य क्यों नहीं चला सकती। (कोई एक)	(3)
(संकेत:- क्योंकि समता अंश पूंजी, स्थायी व जोखिम पूंजी प्रदान करती है।)	
प्र०5. अनुकूलतम समता पर व्यापार की स्थिति कौन सी होती है ?	
(संकेत:- जब पूंजी ढांचे में ऋण, समता से ज्यादा होती है।)	(1)
प्र०6. अमिता लि. में पूंजी संरचना में ऋण बिलकुल नहीं है जबकि काजल लि. की पूंजी संरचना में 15 प्रतिशत ऋण कोष है। प्रतिफल दर दोनों की 20 प्रतिशत है। कौन सी कम्पनी समता पर व्यापार का लाभ उठा पायेगी, और क्यों ?	(3)
(संकेत:- काजल लि. क्योंकि ब्याज से कर की मात्रा कम होगी)	

2. विनियोग / निवेश निर्णय:-

- (क) निवेश निर्णय:- इसका संबंध इस बात से होता है कि फर्म के कोषों को विभिन्न प्रकार की सम्पत्तियों में कैसे विनियोजित किया जाए। निवेश निर्णयदीर्घकालीन अथवा अल्पकालीन हो सकता है। दीर्घकालीन निवेश निर्णयों को पूंजी बजटिंग निर्णय भी कहा जाता है। इनमें कोषों की बड़ी मात्रा लगती है तथा इन्हें बार-बार परिवर्तित नहीं किया जा सकता है क्योंकि इनका खर्च बहुत अधिक होता है। यह निर्णय फर्म जोखिम पर प्रभाव डालते हैं। जबकि अल्पकालीन निवेश निर्णयों को कार्यशील पूंजी निर्णय भी कहा जाता है। जो

व्यवसाय की दैनिक कार्यवाही को प्रभावित करते हैं। यह निर्णय व्यवसाय की देयता तथा लाभदायकता को भी प्रभावित करते हैं।

पूँजी बजटिंग निर्णयों को प्रभावित करने वाले कारक:-

1. **परियोजना का रोकड़ प्रवाह:-** विभिन्न परियोजनाओं के जीवन काल के दौरान उनसे क्रमानुसार प्राप्त होने वाली रोकड़ तथा उन पर किये जाने वाले रोकड़ व्ययों के आधार पर उत्तम परियोजना का चुनाव किया जाना चाहिए।

उदाहरण:- निवेश प्रस्ताव संख्या

	प्रस्ताव संख्या 1	प्रस्ताव संख्या 2	प्रस्ताव संख्या 3
निवेश के जीवन में शुद्ध रोकड़ आगमन	5,00,000	7,00,000	2,00,000
निवेश की आयु	10 वर्ष	10 वर्ष	10 वर्ष

प्रस्ताव संख्या 2 में निवेश करना चाहिए। क्योंकि शुद्ध रोकड़ आगमन सबसे अधिक है।

2. **आय की दर:-** किसी परियोजना की सबसे महत्वपूर्ण कसौटी उससे होने वाली आय तथा उसमें निहित जोखिम होता है। अतः परियोजना का चुनाव करते समय इनका ध्यान आवश्यक होता है।

व्याख्या	निवेश प्रस्ताव संख्या		
	प्रस्ताव संख्या 1	प्रस्ताव संख्या 2	प्रस्ताव संख्या 3
प्रतिफल की दर निवेश के जीवन काल में $= \frac{\text{कुल प्रतिफल}}{\text{प्रारंभिक निवेश}} \times 100$	13%	24%	15%

प्रस्ताव संख्या 2 का चयन करना चाहिए, क्योंकि इसमें प्रतिफल की दर सबसे ज्यादा है।

3. **शामिल निवेश कसौटी:-** विभिन्न प्रस्तावों का मूल्यांकन बजटिंग तकनीकों के आधार पर किया जाता है। निवेश की राशि, ब्याज की दर, जोखिम, रोकड़ प्रवाह तथा आय की दर आदि की गणना करनी पड़ती है।

यदि मुख्य कसौटी 'जोखिम' है तो वह निवेश प्रस्ताव चुनना चाहिए, जिससे जोखिम की मात्रा न्यूनतम है।

प्र०1. उस वित्त निर्णय का नाम बताइये जो व्यवसायी को अपने व्यवसाय की एक नई शाखा खोलने में सहायता करेगा ? (1)

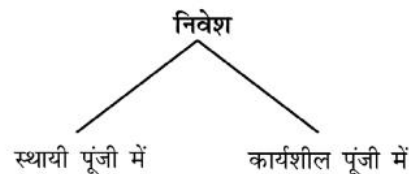
(संकेत:- निवेश निर्णय)

प्र०2. एक कम्पनी अपनी नई इकाई की स्थापना करना चाहती है जिसे 15 करोड़ रु. की मशीनरी लगाई जाएगी। सम्मिलित वित्तीय निर्णय को पहचानिए। (1)

(संकेत:- निवेश निर्णय)

प्र०3. उस वित्त निर्णय का नाम बताइए जिसमें एक व्यवसायी, व्यवसाय में एडवांस तकनीक लाने के लिए धन का प्रयोग करता है। (1)

(संकेत:- निवेश निर्णय)



स्थायी पूंजी:-

स्थायी पूंजी तथा उसे प्रभावित करने वाले कारक:- दीर्घकालीन सम्पत्तियों में किये गये निवेश को स्थायी पूँजी कहा जाता है, जो एक लम्बे समय तक प्रयोग की जाती है। अतः स्थाई सम्पत्तियों को दीर्घकालीन वित्तीय स्रोतों से ही प्राप्त करना चाहिए। स्थायी पूंजी में बड़ी मात्रा में कोष लगाए जाते हैं तथा ऐसे निर्णयों को भारी क्षति उठाये बिना नहीं बदला जा सकता है। स्थिर पूंजी को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं:-

1. **व्यवसाय की प्रकृति:-** एक निर्माणी उपक्रम को स्थाई सम्पत्तियों, संयंत्र, मशीनों आदि की अधिक आवश्यकता होती है। जबकि व्यापारिक उपक्रम को स्थाई सम्पत्तियों, संयंत्र, मशीनों आदि की आवश्यकता नहीं होती है। अतः निर्माणी उपक्रम में स्थाई पूँजी की आवश्यकता अधिक होता है।

2. **संक्रिया का मापदंड:-** बड़े स्तर पर कार्य करने वाले संगठनों को छोटे स्तर पर कार्य करने वाले संगठनों के मुकाबले अधिक स्थाई पूंजी की आवश्यकता होती है। क्योंकि उन्हें बड़ी-बड़ी मशीनों की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए जन उपयोग प्रतिष्ठानों जैसे रेलवे को स्थायी संपत्तियों में अधिक निवेश की आवश्यकता होती है।
3. **तकनीक का विकल्प:-** पूंजी प्रधान तकनीक का प्रयोग करने वाले संगठनों को श्रम प्रधान तकनीक का प्रयोग करने वाले संगठनों से अधिक स्थाई पूंजी की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि उन्हें बड़ी-बड़ी मशीनें लेनी पड़ती है।
4. **तकनीकी उत्थान:-** जिन उद्योगों में सम्पत्तियाँ शीघ्र ही अप्रचलित हो जाती हैं उन्हें अन्य संगठनों/ उद्योगों के मुकाबले अधिक स्थाई पूंजी की आवश्यकता पड़ती है।
5. **विकास प्रत्याशा:-** ऐसी संस्थाएँ जिनके पास उच्च विकास योजना होती है को अधिक स्थायी पूंजी की आवश्यकता होगी क्योंकि उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए नये संयंत्र आदि क्रय करने होते हैं।
6. **विविधीकरण:-** यदि कोई कम्पनी विविधीकरण प्रक्रिया को अपनाती है तो संयंत्र व मशीनों के लिए उसे अधिक स्थाई पूंजी की आवश्यकता होती है।
7. **वित्त व्यवस्था विकल्प:-** जब एक फर्म, स्थायी संपत्तियों को पट्टे (lease) पर लेती है तो वह उन्हें पट्टे का किराया देकर इस्तेमाल कर सकती है, ऐसी स्थिति में स्थायी पूंजी की आवश्यकता में कमी आती है।
8. **सहयोग का स्तर:-** यदि कुछ व्यवसाय संगठन आपस में मिलकर एक दूसरे की सुविधाओं की साझेदारी करने पर सहमत हो तो स्थायी पूंजी की कम मात्रा में आवश्यकता होगी।

कार्यशील पूंजी तथा उसे प्रभावित करने वाले कारक:-

कार्यशील पूंजी वह होती है जिसके माध्यम से दैनिक संचालन क्रियाओं को सुगम रूप में संचालित रखने में व्यवसाय को सहायता प्राप्त होती है। स्थाई संपत्तियों में निवेश के अलावा प्रत्येक व्यावसायिक संगठन को चालू सम्पत्तियों में भी निवेश की आवश्यकता होती है जिन्हें एक वर्ष में रोकड़ या रोकड़ के समतुल्यों में परिवर्तित किया जा सकता है ये सम्पत्तियाँ व्यवसाय को तरलता प्रदान करती हैं। कार्यशील पूंजी दो प्रकार की होती है:- **सकल कार्यशील**

पूंजी तथा शुद्ध कार्यशील पूंजी — सभी चालू सम्पत्तियों में किये गए निवेश को सकल कार्यशील पूंजी कहते हैं। जबकि चालू दायित्व पर चालू-सम्पत्तियों के अधिक्य को शुद्ध कार्यशील पूंजी कहते हैं। एक संगठन की कार्यशील आवश्यकताओं को निम्नलिखित कारकों द्वारा प्रभावित किया जाता है।

शुद्ध कार्यशील पूंजी = चालू सम्पत्तियाँ - चालू दायित्व

स्थायी पूंजी व कार्यशील पूंजी में अन्तर

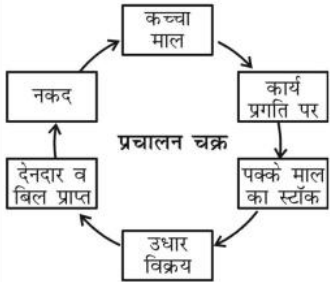
(Difference Between Fixed Capital and Working Capital)

आधार	स्थायी पूंजी	कार्यशील पूंजी
1. प्रकृति	स्थायी पूंजी की राशि व्यवसाय में फंसी रहती हैं	कार्यशील पूंजी की राशि व्यवसाय में घूमती रहती है।
2. उद्देश्य	स्थायी पूंजी का उपयोग स्थायी सम्पत्तियों को क्रय करने में होता है।	कार्यशील पूंजी का उद्देश्य कार्यशील सम्पत्तियों का उपयोग चालू सम्पत्तियों को क्रय करने में किया जाता है।
3. मुख्य स्रोत	अंश, ऋण एवं संचित आय स्थिर पूंजी के मुख्य स्रोत हैं।	वाणिज्यिक बैंक, सार्वजनिक जमाएँ कार्यशील पूंजी के मुख्य स्रोत हैं।
4. अवधि	स्थायी पूंजी की आवश्यकता दीर्घकाल के लिए होती है।	कार्यशील पूंजी की आवश्यकता अल्पकाल के लिए होती है।

कार्यशील पूंजी की आवश्यकता को प्रभावित करने वाले तत्व:-

प्रभावित करने वाले तत्व	ज्यादा कार्यशील पूंजी की आवश्यकता	कम कार्यशील पूंजी की आवश्यकता
व्यवसाय की प्रकृति	निर्माणी उद्योग, प्रक्रिया होने के कारण।	व्यापारिक संस्थाएं क्योंकि उत्पादन नहीं होता।
प्रचालन स्तर	उच्च प्रचालन स्तर पर क्योंकि स्कन्ध की मात्रा ज्यादा होती है।	लघु प्रचालन स्तर क्योंकि स्कन्ध की मात्रा कम होती है।
व्यावसायिक चक्र	तेजी के दौर में, क्योंकि उत्पादन ज्यादा होता है।	मन्दी के दौर में, क्योंकि उत्पादन कम होता है।

कार्यशील पूँजी की आवश्यकता को प्रभावित करने वाले तत्त्व—

मौसमी कारक	मौसम के चरम स्तर पर मौसमी व्यवसाय में ज्यादा उत्पादन होता है।	मौसम समाप्त होने पर क्योंकि माँग कम हो जाती है।
उधार विक्रय की सुविधा	गाहकों को उधार सुविधा दी जाने पर	नकद समान बेचने पर
उधार क्रय की सुविधा	नकद क्रय करने पर	उधार क्रय करने पर
मुद्धा स्फीति व विस्फीति	मुद्धा स्फीति के दौरान क्योंकि कच्चे माल की कीमत व मजदूरी पर बढ़ जाती है।	मुद्धा विस्फीति के दौरान, क्योंकि कीमत स्तर गिर जाता है।
प्रचालन चक्र / कच्चा माल खरीदने से लेकर ग्राहकों से पैसा वसूलने तक का बीच का समय	लम्बा प्रचालन चक्र 	छोटा प्रचालन चक्र
कच्चे माल की उपलब्धता	यदि कच्चा माल ऑर्डर देने व प्राप्त करने में ज्यादा समय लगता है। (लीड टाइम)	लीड टाइम कम होने पर
वृद्धि के अवसर	ज्यादा वृद्धि के अवसर	कम वृद्धि के अवसर
प्रतियोगिता का स्तर	ज्यादा स्कन्ध रखना पड़ता है।	स्कन्ध रखना पड़ता है।
उत्पादन चक्र	लम्बा उत्पादन चक्र	छोटा उत्पादन चक्र

प्र०1. “स्थायी पूँजी निर्णय बदले नहीं जा सकते।” क्यों ? (1)

(संकेत:- ज्यादा निवेश होने के कारण, बिना हानि उठाए, इन निर्णयों को बदला नहीं जा सकता)

- प्र०2. किन्हीं दो मौसमी उद्योगों के उदाहरण दीजिए। (1)
(संकेत:- 1. ऊनी उद्योग 2. आइसक्रीम उद्योग)
- प्र०3. परिचालन चक्र, कार्यशील पूंजी की आवश्यकता को किस प्रकार प्रभावित करता है ? (1)
(संकेत:- लम्बे परिचालन चक्र में ज्यादा कार्यशील पूंजी की आवश्यकता होती है।)

3. लाभांश निर्णय:-

लाभ का वह भाग जो अंशधारियों में बांटा जाता है उसे लाभांश कहते हैं। प्रत्येक कम्पनी को यह निर्णय लेना होता है कि लाभ का कितना हिस्सा, लाभांश के रूप में बांटे और कितना संचित आय के रूप में रखे। लाभांश निर्णय लेते समय अंशधारियों की सम्पदा (लाभांश / संचित आय) को अधिकतम करना ध्यान में रखना चाहिए।

कुल आय



1. **उपार्जन (आय):-** जिन कम्पनियों की आय स्थाई तथा अधिक होती है, वे अधिक लाभांश दे सकती हैं, क्योंकि लाभांश वर्तमान तथा भूतकालीन उपार्जनों में से दिया जाता है।
2. **लाभांश की स्थिरता:-** प्रायः कम्पनियाँ स्थायी लाभांश नीति अपनाती हैं। यदि कोई कम्पनी लगातार लाभांश देती आ रही है तो वह भविष्य में भी लाभांश देगी।
3. **विकास की संभावना:-** यदि निकट भविष्य में कम्पनी के विकास की सम्भावना होती है तो उपार्जन के अधिकांश भाग को वह अपने पास प्रतिधारित राशि के रूप में रख लेती है। अतः कम लाभांश दिया जायेगा।
4. **रोकड़ प्रवाह स्थिति:-** लाभांश के कारण रोकड़ का बहिर्गमन होता है, अतः पर्याप्त रोकड़ की उपलब्धता होने पर ही लाभांश दिया जा सकता है।

5. **अंशधारियों की प्राथमिकता:-** कुछ अंशधारी ऐसे अवश्य होते हैं जो अपने निवेश से एक नियमित आय की आशा करते हैं। यदि अंशधारी लाभांश की अपेक्षा रखते हैं तो कम्पनी लाभांश दे सकती है।
6. **करारोपण नीति:-** कम्पनी द्वारा दिये जाने वाले लाभांश पर उसे कर देना पड़ता है, अतः कर की दर अधिक होने पर कम्पनी कम लाभांश देती है, जबकि कर की दर कम होने पर कम्पनी अधिक लाभांश दे सकती है।
7. **स्टॉक मार्केट / पूंजी बाजार प्रतिक्रिया:-** लाभांश बढ़ना अंशधारियों के लिए एक अच्छी खबर है। ज्यादा लाभांश होने से अंशों का बाजार मूल्य बढ़ता है और कम लाभांश होने से बाजार मूल्य घटता है।
8. **कानूनी बाधाएँ:-** कम्पनी अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत लाभ की सम्पूर्ण मात्रा को लाभांश के रूप में बाँटा नहीं जा सकता और कई वैधानिक संचयों के लिए प्रावधान करना अनिवार्य है। इससे लाभांश घोषित करने में कम्पनी की क्षमता सीमित हो जाती है।

- प्र०1. कर का भुगतान करने के बाद अंशधारियों में लाभ के वितरण सम्बन्धी निर्णय को क्या कहते हैं ? (1)
(संकेत:- लाभांश निर्णय)
- प्र०2. किस प्रकार की कम्पनी ज्यादा व अधिक लाभांश देने की स्थिति में होती है ? (1)
(संकेत:- जिसके पास लाभ और संचय अच्छी मात्रा में हों)
- प्र०3. एक कम्पनी पिछले 12 वर्षों से अच्छा लाभ कमा रही है। इसके पास अच्छी मात्रा में संचय भी है। किंतु बंधी लागतों का भार भी ज्यादा है। उधार विक्रय नीति के कारण के पास पर्याप्त रोकड़ नहीं है। क्या कम्पनी अच्छी लाभांश दर घोषित कर सकती है ? कारण दीजिए। (1)
(संकेत:- नहीं, क्योंकि रोकड़ की कमी है।)

केस स्टडीज को समझने के लिए महत्वपूर्ण शब्द

1. संचालन का वित्तीय ब्लूप्रिंट - वित्तीय नियोजन
2. तरलता और व्यापार की लाभप्रदता को प्रभावित करने वाले निर्णय - लघु अवधि/अल्पकालिक निवेश निर्णय।

3. वित्तीय जोखिम और व्यापार की लाभप्रदता को प्रभावित करने वाले फैसले - पूंजीगत बजट निर्णय।
4. दीर्घकालिक निवेश निर्णय - पूंजी बजटिंग निर्णय
5. ब्याज और समता का अनुपात - पूंजी संरचना
6. वित्त का सबसे सस्ता स्रोत - कक
7. वित्त का जोखिम मुक्त स्रोत - समता
8. लाभ के निपटारे से संबंधित निर्णय - लाभांश निर्णय
9. विभिन्न दीर्घकालिक स्रोतों से उठाए जाने वाले वित्त की मात्रा से संबंधित निर्णय-लाभांश निर्णय
10. स्वामित्व पूंजी एवं ऋण पूंजी का सबसे उपयुक्त संयोजन ताकि प्रति अंश उच्च कमाई उत्पन्न की जा सके - समता पर व्यापार/वित्तीय लीवरेज।

अभ्यास के लिए प्रश्न

- प्र०1. एच.सी.एल. कम्पनी के वित्त प्रबंधक ने सारा लाभ संचित करने का निश्चय किया ताकि भविष्य की विकास योजनाओं की जरूरतों को पूरा किया जा सके। इसमें शामिल निर्णय का नाम बताइए। (1)
- प्र०2. टाटा सन्स का ऋण समता अनुपात 4 : 1 है जबकि बजाज कम्पनी का 1 : 1 है। टाटा सन्स, बजाज की तुलना में कौन सा लाभ उठा रही है? (1)
- प्र०3. डाबर इंडिया ने बिक्री बढ़ाने के लिए उधार सीमा व समय बढ़ाने का निश्चय किया। सम्मिलित निर्णय का नाम बताइए। (1)
- प्र०4. भारती लि० एक अग्रणी मोबाइल कम्पनी है। यह क्वीन लि० का अधिग्रहण रु. 1,000 करोड़ में करने की योजना बना रही है। इसमें कौन-सा वित्तीय निर्णय निहित है? (1)
- प्र०5. चन्दा लि० एक लैपटाप बनाने वाली क० है। इसने रु. 1,000 करोड़ का लाभ कमाया। निर्देशकों में 38% लाभांश का अनुमोदन किया। एक वित्तीय प्रबन्धक के तौर पर, लाभांश नीति बनाते समय आप किन बातों का ध्यान रखेंगे? (3)

- प्र०6. पंकज “गोदाम-व्यवसाय” में कार्यरत है। उसकी कार्यशील पूँजी की आवश्यकताओं का अनुमान लगाए। पंकज ‘परिवहन-व्यवसाय’ भी आरम्भ करना चाहता है। इस व्यवसाय में इसकी स्थायी पूँजी की आवश्यकताओं को प्रभावित करने वाले तत्वों को लिखिए। (2)
- प्र०7. पूर्ण वित्तीय जोखिम किस प्रकार ज्ञात किया जाता है? (1)
- प्र०8. वित्तीय प्रबन्ध किस प्रकार अंशधारियों की सम्पदा को अधिकतम करता है? (1)
- प्र०9. ‘समता पर व्यापार’ किस प्रकार किसी कम्पनी के पूँजी ढाँचे के चयन को प्रभावित करता है? उदाहरण सहित समझाइए। (5)
- प्र०10. “कम्पनी की वार्षिक सभा के दौरान, प्रकाश लि० के सी.ई.ओ. श्री रजनीश ने अंशधारियों के आगे कम्पनी के विस्तार की योजना रखी और वित्त प्रबंधक, श्रीकांत ने समता के बजाय ऋणपत्र जारी करने का विचार दिया, इस तर्क के साथ कि ऋण पूँजी की आवश्यकता पूरी होने पर वापिस किया जा सकता है।”
- ऊपर वर्णित परिस्थिति में वित्तीय निर्णय को प्रभावित करने वाले कौन से तत्व को दर्शाया गया है? उस तत्व की व्याख्या कीजिए। (3)
- प्र०11. “जय भारत क० लि०” गुरू ग्राम, हरियाणा में आटो पार्ट सप्लाई करने वाली कम्पनी है। उनका व्यवसाय बहुत से शहरों में फैला हुआ है। इस का सी.ई.ओ. गुजरात में टाटा मोटर्स के पास एक कारखाना लगाना चाहता है। मंदी के कारण पिछले दो वर्षों से उनका व्यवसाय कठिनाईयों झेल रहा है। उसके वित्त सलाहकार एवं सी.ए. राकेश गुप्ता ने उन्हें सलाह दी की “मंदी के समय लाभ में गिरावट हो जाती है इसलिये विनियोजक निश्चित मात्रा में आय प्राप्त करने के लिए ऋणपत्र में पैसा लगाते हैं। इसलिये कम्पनी को ऋणपत्र जारी करने चाहिए।”
- यह पैराग्राफ में वित्तीय निर्णय के कौन से तत्व को प्रकाशित कर रहा है? (3)
- प्र०12. लेनदारों की संख्या में वृद्धि होने का कार्यशील पूँजी की आवश्यकताओं पर क्या प्रभाव पड़ेगा? (1)
- प्र०13. ‘कर लाभ’ केवल ब्याज के भुगतान पर मिलता है, पूर्वाधिकार अंशों के लाभांश पर नहीं। क्यों? (3)

प्र०14. रैनबैक्सी लि. पिछले 15 वर्षों से अच्छा लाभ कमा रही है। कम्पनी की बाजार में अच्छी ख्याति है, जिसके कारण, कम्पनी को जब भी ज़रूरत पड़ती है, ऋण और समता को आसानी से प्राप्त कर सकती है। इसलिए कम्पनी ने पिछले वर्ष से 25% लाभांश बढ़ा कर घोषित किया।

ऊपर दिए गए पैरे में वर्णित लाभांश को प्रभावित करने वाले दो तत्वों की व्याख्या कीजिए। (2 + 2)

प्र०15. आर.ई.आई. एग्रो फूड लि० एक प्रसिद्ध मल्टी नेशनल कम्पनी है। एस. के नेगी उस का वित्त मैनेजर हैं। वह समता अंशधारियों की पूंजी को बढ़ाना चाहता है जो उन्होंने कम्पनी में लगाई है। वह यह जानता है कि सर्वोत्तम विनियोग निर्णय, सर्वोत्तम वित्तियन निर्णय तथा सर्वोत्तम लाभांश निर्णय के बिना शेयरों के मूल्य में वृद्धि नहीं की जा सकती उसने ये निर्णय ठीक ढंग से लिये और सफलता प्राप्त की।

इस सफलता में वित्तिय प्रबन्ध का कौन सा उद्देश्य है। (1)

प्र०16. उस घटक का नाम बताइए जिसके कारण एक पेट्रोकेमिकल कम्पनी में स्थायी पूंजी की ज्यादा आवश्यकता होती है जबकि एक सूचना प्रौद्योगिकी कम्पनी में कम जबकि दोनों में आय समान होती है। (3)

उत्तर के लिए संकेत

- उ०1. लाभान्श निर्णय
- उ०2. समता पर व्यापार
- उ०3. कार्यशील पूंजी की आवश्यकता
- उ०4. निवेश निर्णय (व्याख्या सहित)
- उ०5. (क) आय
- (ख) रोकड़ प्रवाह
- (ग) आय की स्थिरता
- (घ) विकास के अवसर
- (कोई चार, व्याख्या सहित)
- उ०6. कम, कार्यशील पूंजी की आवश्यकता, क्योंकि 'गोदाम व्यवसाय' सेवा क्षेत्र में है।
- स्थायी पूंजी की आवश्यकता को प्रभावित करने वाले तत्व:-
- (क) सहयोग का स्तर
- (ख) विकास की संभावनाएँ
- उ०7. (क) ऋण की लागत ज्ञात करके (व्याख्या सहित)
- (ख) स्थायी प्रचालन लागत ज्ञात करके (व्याख्या सहित)
- उ०8. उचित:- वित्त, निवेश व लाभान्श निर्णय लेकर (उचित व्याख्या सहित)
- उ०9. 'समता पर व्यापार' का उदाहरण
- उ०10. पूंजी ढांचे में लोचशीलता (व्याख्या सहित)
- उ०11. पूंजी बाजार की स्थिति (व्याख्या सहित)
- उ०12. ज्यादा कार्यशील पूंजी की आवश्यकता होगी।
- उ०13. क्योंकि ब्याज एक खर्चा है, जबकि लाभान्श, लाभ का बटवारा है।
- उ०14. (क) आय में स्थिरता (ख) पूंजी बाजार तक पहुँच (व्याख्या सहित)
- उ०15. अंशधारियों की धन सम्पदा को अधिकतम करना
- उ०16. व्यवसाय की प्रकृति (व्याख्या सहित)